

श्री

त्रि र त्र

—

श्री-वक्रसंवर्णय

अथ वचन महाविज्ञानया आगमनायु चचाद

मुना न मोरया यमं इ शल

ॐ नमः श्रीगुरुभ्यः १

ॐ नमः श्रीगुरुभ्यः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

हास्यनस्सुट विना. जिता २ श्रीगुरुता
सदभना ५५. नलमंतुलनिर्यातया मि॥
प्रथमतन श्रीगुरुमंतुलनरिचिता. वनलकम
लमिनचनिया २ पंकावजाता. पूर्वविदहा.
नंकावजाता. ऊंका दीपं २ लंभपनरुमशवनि-

घट रुक्म रुक्म. विविधियतना. स. पू. १३२ या
 उपदीप. जाउपदीप. लाउपदीप. बाउपदीप.
 ॥०॥ गजयतना. मूर्धन्ययतना. मूर्धन्ययतना.
 लीयतना २४ रुक्म त्व. मलियतन. चक्रयत
 ना. वासव निधनसं. पू. १३३ ॥ १ ॥ ॥०॥

अमि २

जागप मंत्रादि ॥ तालमाप ॥ ॥ अनिल. न
 न. लज्जल. जीवनमाऊ २ म. न. मंतल. च. क
 नाया २ व. कपंतनसय. जायसयना. पविहति
 ह. रुच. जाया ॥ क ॥ नामा २ ॥ ॥ ॥ ॥
 नयक रुहा. अ. लिंगन. ह. रुच. लयिया २ व

ऊवाजाहि. आ. लिंगनसं. वनष्यलधिया २ रु
 तीभवीनवीनं न. ऊहि २ तहि २ अष्टममम
 नं २ अरुह तसर्वं व वज्र षाठ मदिगमं नतिव
 यनसं. ताव २ ति एवनतु क्र नुक्र जाय एजा नी
 ति एवनतु क्र. नुक्र वीजा २ ति. छि एवननव

नाटन प्रसादिनं. रु लिंगा नीन का. का ली.
 अहिनि श्रीसं. तगूर. वीजा तु जागा २ कादिगानी
 ताव. अताव २ ज. जा मनहा एषव. धनमा नय
 एषमा नृगगनसं ताव ॥ ५ ॥ ॥ ~~जागनाटक~~ ॥
~~लदुर्जमान~~ ॥ ॥ नक्र वदन त्रिय नायन सूर्य नी २

अष्टादशरुद्ररुद्रनरुद्रकि नल्ल॥ ॐ ॥ ~~रुद्र~~
~~विवाचुहिनामकिदवि~~ ॥ अगतप्रभादिपमय
नस्रंज॥ ॐ ॥ आगमवेदप्रजापुत्रपात्रे २
गधनमदी आगुत्रउपदेष्ट॥ ॐ ॥ पंचबुद्धत्व
रूपसुत्र २ सहस्रश्रुति निवेद्या हंरुचैतुहंर

द्य॥ ॐ ॥ सत्गुरुचनलभिपंगतधनिया २
हनयिवाकवशस्रजास्रनरुपी॥ ॐ ॥ ॥
~~आगमं धनहेनवि~~ ॥ ~~नाल्ल~~ ॥ ॥ अक्रुदहनपंच
ह्यानस्वरूपं २ पंचामिषा नसपंचसा निष्कि
या॥ ॐ ॥ ~~रुद्र~~ ~~देववलिनायति~~ ~~रुवनवीनार~~

ॐ क्रुदहन ५

वीजं मलापकसमधानं ॥ ५ ॥ वीजवीजं भव
 सह जानं ॥ ६ ॥ कम कमलावर्धनं हृदयानं ॥ ७ ॥
 पंचवक्त्रं पंचद्वानस्वरूपं ॥ देवास्त्रयत्रयप्रभा
 दित हृदया ॥ ८ ॥ ॐ श्रीं क्रीं लीं धन
 यानं ॥ ९ ॥ उमर्धं ॥ धनि वीजमानं ॥ १० ॥

जागरेण ॥ तालदर्शनं ॥ ॥ नमस्कृतं श्रीकांक्षर
 वधरं ॥ साकं विसृज्य उतां रत्नरत्नं ॥ ११ ॥ नना
 रं ॥ नना ननं ॥ ॥ भवत्सुखं वदं हृदयं
 सनदसुखं हियकां रत्नरत्नं ॥ १२ ॥ ॐ श्री
 लिंगन श्रीगधरं ॥ वज्रं ॥ मूलाय मृगं

नमस्कृतं
 ५

विष्णु

॥ ॐ ॥ मायाविह्वलविचित्रनगगुह्यसहियवज
सत्त्वपत्रमभय ॥ ॐ ॥ ~~नागरोचनी~~ ~~मख~~
~~नागमधुमत्~~ ॥ ~~कालदुर्जमान~~ ॥ ॥ त्रिचक्रनविभ
मिमंतुलमाह ॥ स्थितिआनंदमूर्तिधनार
वज्रवाहाहि आलिंगनसंबध ॥ नानात्रिमिम

हा कला ॥ ॐ ॥ ~~ननाहं~~ २ ~~न~~ ~~ना~~ ~~न~~ ~~हं~~ ~~हं~~
~~हं~~ ॥ ॥ नीलवर्णचतुर्वक्त्र ॥ प्रतिमुखत्रिभुज ॥ पत्र
मा ॥ नंदमूर्तिधनार ॥ ॥ विश्ववज्रमूर्ध्व
उज्ज्वलमकुटधन ॥ हातुआतनहासुल्लसि
ता ॥ ॥ वज्रधं ० गजचर्म ॥ उममुखपांगधन ॥

विजया नंदमूर्तिधनार ॥ कनतिकपाल
पनमुपासधन. तिभूलवृक्षमिधनार ॥
दिगंविदुगं. ककाः ॥ ५ ॥ दि. कस दाति या न. सह
जा. नंदमूर्तिधनार ॥ नमामि २ श्रीचक्रं
वन. सत्सुचनधनार ॥ ५ ॥

श्री

विष्णु

शिवदेवतं क्लृप्तं इव महा रागत देवद
नामहा विष्णुं क्लृप्तं पुत्रं शिवं क्लृप्तं लक्ष्मणं क्लृप्तं नृप

पृष्ठ ५२

ॐ आर्यभट्ट

जागहो नव॥ गालकति॥ ॥ ॐ आर्यभट्ट रुद्रं नत्वा हा
मं तु विष्णुं आरुप॥ पूजापूजितः पूजसंतापः न
त्वत्तुपरावन्तु न॥ ॐ ॥ त्वत्तुपरावन्तु न॥ ॐ ॥ त्वत्तुपरावन्तु न॥
ॐ ॥ त्वत्तुपरावन्तु न॥ ॐ ॥ त्वत्तुपरावन्तु न॥ ॐ ॥ त्वत्तुपरावन्तु न॥
ॐ ॥ त्वत्तुपरावन्तु न॥ ॐ ॥ त्वत्तुपरावन्तु न॥ ॐ ॥ त्वत्तुपरावन्तु न॥

सर्वयुक्तनाकुसुमरुतपुत. पिभचलं नृपस्यार
 नैरुताकताकि निइयि नृषु मम मम नै. धुं दं व
 लिगुक्तगुक्तुत ॥ समयाचकुतुदा नपति न.
 सर्वसुखसंपद मं ति नै २ यत्तेवयत्तेव (हं न
 पापिवधन. श्रीधुपमातृका एवंतुत ॥ दान

पतिमर्वकार्यसिद्धि न. मनीनपसर्वसुखप
 दमं ति नै २ आनसंज्ञान तथागत वयन. साहा
 यं कन एवंतुत ॥ ध्रु ॥ दे० ॥ नागविरास ॥ ताल
 साध ॥ ॥ कैंकैंकैं ३ कैंकैं ५ ह धर २ सं. सा. न. ए
 यत नृ २ दं दं आलिंगन आग धर २ हव. जा.

नैरुताकता
 ८

तु कः कनाः ॥ कः ॥ हवः जाः तु कः कनाः ॥
 कनाः कः कः ॥ सुननः नवदितः चनलः वः ॥
 कुसुमविलपनः रुधः ॥ रावविमो कः
 विसहंसाः तु कः गुलः श्रीः काटियाः ॥ नमा
 मिः श्रीः हवः जाः तु कः गुलः श्रीः पिः थियाः ॥ कः

नागमादगिनिः ॥ लकालः ॥ चक्रिकुंठलकंठि
 नचकमखलद्विषितः गी वः नः ननभिः नमाला
 २ सनचक्रिचक्रिनेयाः एस्मवित्प्रवितः गगन
 ता निवंदः पिवाजाः ॥ कः ॥ अं वः अतिहः नवः दः
 मानुकोलाः इगनाथः श्रीः संवनजायाः ॥

चक्रिकुंठल
 २

वज्र कृत्वा टक. हा. पधिया. कं १० दिन रुख
दांग ॥ **॥ संप्रत आगिनि. कमलविहासिग**
या. महासूत्रमभिपुष्टा ॥ ० ॥ वज्रवा. नाहिना
लिंगनसंबन. नाचयिवरुबीह तं ग २ वा. कृति
कालयित्री उंतिह नृच. नृर्द्धरवरु लनप्रसा

५॥ **॥ सहस्रसूत्रिजेया. गमवंतिकर्षपा. ह**
नृचचन १ प्रसा ५॥ • **॥ प्रसा. ना. लिंगन. ह नृच**
नीलवर्ण. विलासयिभूय क नृ १॥ ५॥ **॥ ५॥**
~~नागवसंगलसिग ॥ गलार्द्धमान ॥~~ **॥ अष्टदलसना ५. ५**
ह व प्रकाशित २ श्री गणेशाय नमः ॥ नलोचना

॥ ॐ ॥ ~~दहिनवक्रपाणिनामकमलपारसिन~~
~~मामि श्रीधर्मनाथमहामुनि~~ ॥ ॥ दहिनक्रिञ्जि
नीधन-वामकं शि कापाठ-विचित्र-वीवनधनि-
ऋतयप्रदाता ॥ ॥ कारुण्यमानस-निर्मलहृ
दया-जगत्तुङ्घानल-विरवप्रदाता ॥ ॥ जनमर

सृगतचनलकमल-तुङ्गसुमनलमम-भातुप्रदा
ता ॥ ॐ ॥ ~~नागनाथकवि~~ ॥ ~~गलनाथ~~ ॥ ॥ कमलवि
काभित-स्थितिदृढासन-कुम्भप्रियवर्ण-समद
हा-चतुर्नवदन-कुवलयदलासन-नेत्रपु-काभि
ता ॥ ॐ ॥ ~~नमामि श्री श्री महामं~~ ~~श्री सकलगुहना~~

यवनगर्भः ॥ **कुसुमिदहन्** - **ज्ञानप्रकाशित** - सर्व
 ह्नु **ज्ञाननिधि** - **वनगता** ॥ **प्रथमकनक** - **ध्वनि**
 तव **उद्यं** ० **मुद्रा** **मालिङ्गन** - **नात्रिता** ॥ **द्वितीयां** **कु**
मधन - **तृतीयज्ञान** **कंध** - **चतुर्थ** **कुसव्य** - **कुनध**
ना ॥ **उत्तर** **तुजपा** **म** - **रवनधर्म** **चाप** - **चतुर्थ**

वामधृत - **पुस्तका** ॥ **जतनमकुट** - **मिथप्रकलि**
 त - **किल्बिषनाभन** - **नुचिवना** ॥ **निर्वृद्धिबुद्धि**
स्मृती - **निमित्त** **तनिका** - **सर्वज्ञज्ञाननिधि** - **वनप्रदा** ॥
गुरुं **चनल** - **मनसमागत** - **पनमाद्यवज्ञ** - **ज**
ध्रु ॥ **नागजलवर्ष** ॥ **नारायणसाध** ॥ **दि** - **र**

ल. शिनि नम नार मरुटकं ॥ दिगं वना ॥ ५
॥ वामक नाटक दहिनक नति २ हाउ नरा हनल
हृषिता ॥ ॥ सूर्य मंठ लमाऊ तांदव मूरति २ ननमिन
माला मूरति ॥ ॥ मरुगु चनल मिनगत ध
नियार वडवा ना हि आनाधिता ॥ ५ ॥ ८० ॥

संस्कृत ॥ १२ साल भा इव वदि १० सध चचा सफ
चोया न ~~नो नाल लया दे वराज या न न व~~
चोया गुजुल थुके आख तुल फल गुदै स कत्य
नं स मा या ना विज्या य माल कर जोरि कि
पा ना धपु स क म नानं हो मया य म इरे
सा र्जन म हा पा प जुल — शुभे